इकाई 4 पाठ्यचर्या और शिक्षा–शास्त्र*

संरचना

4.1 प्रस्तावना

4.2 उद्देश्य

4.3 पाठ्यचर्या के अर्थ को समझना

4.4 पाठ्यचर्या और शिक्षा–शास्त्र के मध्य सम्बन्ध

4.4.1 पाठ्यचर्या में शैक्षणिक विचार

4.5 पाठ्यचर्या में विविध मुद्दे

4.5.1 राष्ट्रीय बनाम स्थानीय पाठ्यचर्या

4.5.2 पाठ्यचर्या का संदर्भीकरण

4.5.3 पाठ्यचर्या सिद्धांत को अभ्यास (व्यवहार) से सम्बन्धित करना

4.5.4 पाठ्यचर्या में सूचना एवं संप्रेषण प्रौद्योगिकी का एकीकरण

4.5.5 पाठ्यविषयी अनुसंधान और अभ्यास (व्यवहार) के लिए मानकों की स्थापना

4.6 प्रमुख पाठ्यचर्या ढाँचे/रूपरेखाएँ

4.6.1 एकीकृत पाठ्यचर्या ढाँचा/रूपरेखा

4.6.2 राष्ट्रीय पाठ्यचर्या ढाँचा/रूपरेखा–2005

4.7 राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 2020 और शिक्षाशास्त्र

4.8 चयन आधारित क्रेडिट प्रणाली (च्वायस बेस्ड क्रेडिट सिस्टम – सी बी सी एस)

4.8.1 चयन आधारित क्रेडिट प्रणाली का अवधारणात्मक ढाँचा/रूपरेखा

4.8.2 चयन आधारित क्रेडिट प्रणाली (सी बी सी एस) (यू.जी.सी.) में प्रयुक्त महत्वपूर्ण पदों का अर्थ

4.9 सारांश

4.10 इकाई अन्त अभ्यास

4.11 संदर्भ ग्रंथ एवं उपयोगी पुस्तकें

4.12 आप की प्रगति जाँच के उत्तर

4.1 प्रस्तावना

समकालीन अवधि में पाठ्यचर्या सम्बन्धी बहस जो विशेष रूप से पाठ्यचर्या के निर्माण, क्रियान्वयन और परिणामों के संदर्भ में होती है, बहुत रुचि पैदा करती हैं । वर्तमान में, विद्यालय और उच्च शिक्षा के पाठ्यक्रम पर बहुत अधिक ध्यान केंद्रित किया जा रहा हैं, क्योंकि वे पाठ्यचर्या में बच्चों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करने के कुछ हिस्सों का निर्माण करते हैं। गुणवत्तापूर्ण शिक्षा में योगदान देने वाली पाठ्यचर्या

* प्रो० एस०ए० मोईन, पूर्व निदेशक, दूरस्थ शिक्षा, एससीईआरटी, बिहार

के महत्व की समझ के साथ, पाठ्यचर्या से सम्बन्धित कई मुद्दे और नए आयाम ध्यान में आए हैं। कैसे पाठ्यचर्या और शिक्षाशास्त्र आपस में सह–सम्बन्धित हैं? शिक्षाशास्त्र के सम्बन्ध में पाठ्यचर्या को समझना क्यों आवश्यक है? कैसे शिक्षाशास्त्र को पाठ्यचर्या के मार्गदर्शक सिद्धांतों का पालन करना चाहिए? पाठ्यचर्या निर्माण से सम्बन्धित विभिन्न मुद्दे और समकालीन परिवर्तन क्या हैं? ये पाठ्यचर्या और शिक्षाशास्त्र के संदर्भ में कुछ महत्वपूर्ण प्रश्न हैं जिन पर विस्तार से चर्चा करने की आवश्यकता है। यह इकाई पाठ्यचर्या और शिक्षाशास्त्र से सम्बन्धित कुछ प्रमुख बिंदुओं की व्याख्या करने का एक प्रयास है।

4.2 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् आपः

- पाठ्यचर्या का अर्थ याद रख सकेंगे;
- पाठ्यचर्या और शिक्षाशास्त्र के बीच सम्बन्ध जान सकेंगे;
- पाठ्यचर्या निर्माण से जुड़े विभिन्न मुद्दों का पता लगा सकेंगे;
- सन्दर्भीकृत शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया की आवश्यकता को महसूस कर सकेंगे;
- पाठ्यचर्या रूपरेखा की अवधारणा और इसके समकालीन परिप्रेक्ष्यों के बारे में समझ विकसित कर सकेंगे; तथा
- चयन आधारित क्रेडिट प्रणाली(च्वायस बेस्ड क्रेडिट सिस्टम – सी बी सी एस) और इसके निहितार्थों की व्याख्या कर सकेंगे।

4.3 पाठ्यचर्या के अर्थ को समझना

'हालाँकि आपने इस खंड की इकाई 2 के अनुभाग 2.3.1 में पाठ्यचर्या की परिभाषा के बारे में पहले ही विस्तार से अध्ययन कर लिया है। आइए हम "पाठ्यचर्या" शब्द का अर्थ याद करें। राष्ट्रीय पाठ्यचर्या ढाँचा/रूपरेखा (एन सी एफ)(2005) के संदर्भ में गठित पाठ्यचर्या' 'पाठ्यविवरण और पाठ्यपुस्तकों पर राष्ट्रीय फोकस समूह पर आधार पत्र पाठ्यचर्या को निम्नानुसार परिभाषित करता हैः

'पाठ्यचर्या' सही रूप से निर्धारित गतिविधियों का समूह जिनकी रचना कुछ खास शैक्षिक उद्देश्य–उद्देश्यों को कार्यान्वित करने के लिए हो। उद्देश्यों का एक ऐसा समूह जिसमें यह शामिल हो कि विषयवस्तु के हिसाब से क्या पढाया जाए और वह ज्ञान कौशल एवं अभिवृत्तियाँ जिन्हें खास तौर से बढ़ावा मिले, साथ ही विषयवस्तु के चुनाव की कसौटियों को दर्शाते कथन, विधियों के विकल्प, सामग्री एवं मूल्यांकन।' ('पाठ्यचर्या, पाठ्यक्रम और पाठ्यपुस्तकों पर राष्ट्रीय फोकस समूह (2006), एन.सी.ई.आर.टी., पृष्ठ संख्या v).

उपरोक्त परिभाषा में, यह स्पष्ट है कि पाठ्यचर्या और शिक्षाशास्त्र का परस्पर सम्बन्ध है। पाठ्यचर्या क्या सामग्री पढ़ाई जानी है, से सम्बन्धित है, जबकि शिक्षाशास्त्र सामग्री को पढ़ाने के लिए किन तरीकों और माध्यमों (मीडिया) का उपयोग किया जाना पर केंद्रित है। विषयवस्तु, विधियाँ और माध्यम पाठ्यचर्या प्रक्रिया का एक अभिन्न अंग हैं। अगले अनुभाग में, हम चर्चा करेंगे कि पाठ्यक्रम कैसे शिक्षाशास्त्र से सम्बन्धित है।

4.4 पाठ्यचर्या और शिक्षा–शास्त्र के मध्य सम्बन्ध

शिक्षाशास्त्र का पाठ्यचर्या से गहरा सम्बन्ध है। पाठ्यचर्या का सम्बन्ध सिखाए जाने वाले संप्रत्यय से है, जबकि शिक्षाशास्त्र का सम्बन्ध उन विधियों से है जिनके द्वारा शिक्षक कक्षाओं में किसी भी अवधारणा या प्रस्ताव को पढ़ाता है। शब्द पेडागोजी (pedagogy), ग्रीक शब्द *पेडोस* (*paidos*) से लिया गया है जिसका अर्थ है "लड़का या बच्चा" और एगोगोस (*agogos*) जिसका अर्थ है "नेता"। इसे अक्सर "बच्चों को पढ़ाने की कला" के रूप में वर्णित किया जाता है। हम शिक्षाशास्त्र को "शिक्षण और अधिगम के ज्ञान के और ये दो अध्यापन के प्रकरण में कैसे एक–दूसरे को कैसे प्रभावित करते हैं के रूप में परिभाषित कर सकते हैं जिनका निर्माण शिक्षक शिक्षार्थियों को अधिगम के अनुभव प्रदान करने के लिए करते हैं, जिससे छात्रों के विकासशील विचारों की सूचना मिल सकती हैं"। जहाँ शिक्षण के ज्ञान और वे क्षण जिसमें अध्यापक की शैक्षिक गतिविधि अपेक्षित होती है का मेल होता है, वहाँ शिक्षाशास्त्र सोच के अधिक अन्तःक्रियात्मक होता है। शिक्षार्थी अक्सर शिक्षकों के स्वयं के अनुभव से और उनके द्वारा पढ़ाए गए संदर्भों से बहुत कुछ सीखते हैं। इसलिए, शिक्षाशास्त्र को पाठ्यचर्या के सन्दर्भ में "कैसे", "क्या" और "क्यों" के बीच एक जटिल पारस्परिक क्रिया के रूप में समझा जा सकता है।

एक शैक्षणिक प्रक्रिया में, शिक्षक और शिक्षार्थियों के बीच सार्थक कक्षा सहभागिता की आवश्यकता होती है। शिक्षाशास्त्र का मुख्य उद्देश्य शिक्षार्थियों को उनके पूर्व अधिगम पर नए ज्ञान के निर्माण और नए कौशलों और दृष्टिकोणों को विकसित करने में सहायता करना है। शिक्षकों के लिए, यह उन्हें इस तरह से पाठ्यक्रम तैयार करने और उन्हें प्रस्तुत करने में मदद करता है, जो शिक्षार्थियों के लिए प्रासंगिक है, उनकी आवश्यकताओं के अनुरूप है। इससे शिक्षार्थियों को न केवल विषयसामग्री के गहन ज्ञान प्राप्त करने की सुविधा होती है, बल्कि उन्हें अपने दैनिक जीवन की परिस्थितियों में लागू करने की क्षमता भी पैदा होती है। इसलिए, एक पाठ्यचर्या को एक दृष्टिकोण के साथ डिजाइन किया जाना चाहिए जो शिक्षकों को अपने शिक्षार्थियों के साथ मिलकर काम करने के सुअवसर प्रदान करता है ताकि वे सबसे उपयुक्त तरीके द्वारा विषय सामग्री का अध्ययन कर सकें।

यदि किसी शिक्षक के पास शिक्षाशास्त्र और पाठ्यचर्या की स्पष्ट समझ है, तो वह सीखने वालों के साथ प्रभावी ढंग से बातचीत कर सकेगा/सकेगी, ताकि यह पता चल सके कि उनकी अधिगम आवश्यकताएँ क्या हैं और तदनुसार उन्हें कैसे पूरा करना है? और यह शिक्षक और शिक्षार्थियों के साथ–साथ शिक्षार्थियों के बीच एक स्वस्थ संवाद को प्रोत्साहित कर सकता है। इसके अलावा, हर व्यक्ति अवधारणाओं की खोज करने और अपने ज्ञान में वृद्धि करने के लिए विचारों, प्रश्नों और ज्ञान को दूसरों के साथ साझा करता है। जैसा कि पहले उल्लेख किया गया है, अच्छी शिक्षात्मक समझ के साथ, एक शिक्षक शिक्षार्थियों को अपने विचारों को साझा करने में मदद कर सकता है, और इस बात की अच्छी समझ रखता है कि पाठ्यचर्या का निष्पादन कैसे होगा तथा उनसे क्या उम्मीद की जाती है। शिक्षार्थी न केवल अपने ज्ञानाधार को बढ़ाएँगे, बल्कि वे अपने जीवन के संदर्भों में अपने प्राप्त ज्ञान की उपयोगिता को समझ सकेंगे। वे सांस्कृतिक ज्ञान के साथ–साथ अपने अद्वितीय और व्यक्तिगत विचारों का निर्माण कर सकते हैं। एक पाठ्यचर्या को शिक्षाशास्त्र में वर्णित उपयुक्त तकनीकों और प्रकियाओं आदि के साथ हस्तांतरित करने से शिक्षार्थियों को नई अवधारणाओं को

अधिक उद्देश्यपूर्ण और सार्थक रूप से प्रतिबिंबित करने का अवसर मिलता है। यदि हम शिक्षाशास्त्र और पाठ्यक्रम की अनुरूपता पर विचार करते हैं, तो हम जान सकते हैं कि किसी विशेष अवधारणा को पढ़ाने के लिए अधिगम का कौन सा दृष्टिकोण और उपागम सबसे अच्छा होगा। इसके माध्यम से, शिक्षार्थियों को अपनी कक्षा में मात्र दर्शक बनने के बजाय, व्यक्तिगत शिक्षण–अधिगम प्रक्रियाओं में भाग लेने का अवसर मिलेगा। पाठ्यचर्या की अपेक्षाओं के साथ, शिक्षाशास्त्र को ऐसे संदर्भों पर विचार करना चाहिए, जो अधिगम होने और किसके साथ होने से सम्बन्धित हो। यह केवल प्रयुक्त शिक्षण–अधिगम सामग्री के बारे में ही नहीं है, बल्कि सार्थक अधिगम हेतु कक्षा में प्रयोग की गई पूरी प्रक्रिया और रणनीतियों के बारे में बताती है। एक सुव्यवस्थित शिक्षाशास्त्र में शिक्षण की गुणवत्ता और सीखने के तरीके में सुधार करने की काफी संभावना होती है, जिससे उन्हें पाठ्यचर्या सामग्री की गहरी समझ प्राप्त करने में मदद मिलती है। एक उचित शैक्षणिक दृष्टिकोण, सीखने की सरल प्रक्रियाओं (बुनियादी संस्मरण और समझ) से परे जटिल शिक्षण प्रक्रियाओं (विश्लेषण, मूल्यांकन और निर्माण) से आगे बढ़ने में शिक्षार्थियों की सहायता करता है। इस स्थिति में, शिक्षण प्रक्रिया में पसंदीदा अधिगम शैली को अपनाने का पर्याप्त स्थान मिलता है जो छात्रों को उनके मन पसंद विधि द्वारा सीखने का मौका देता है।

हालाँकि, "शिक्षाशास्त्र" शब्द का प्रयोग विधि या तकनीक के विकल्प के रूप में भी किया जाता है। दुर्भाग्यवश, इस सीमित समझ के कारण शिक्षार्थियों के लिए एक समग्र शिक्षण आयोजित करने में शिक्षकों के बीच असमानता रहती है। इसलिए, यह समझना महत्वपूर्ण है कि हमें न केवल शिक्षाशास्त्र के अवलोकनीय आयामों पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए, बल्कि शिक्षाशास्त्र के व्यक्तिगत, सम्बन्धपरक और सुधारात्मक आयामों की भी सक्रिय रूप से जाँच करनी चाहिए। शिक्षाशास्त्र की परिभाषा के अनुसार, यह एक रचनात्मक प्रयास है। शिक्षाशास्त्र को सोच–विचार कर इस प्रकार आकार दिया जाता है कि उससे विषयवस्तु, शिक्षार्थियों, और स्वयं के बारे में समसामयिक और तात्कालिक तर्कपूर्ण ज्ञान अर्जित किया जाए, शिक्षाशास्त्र को एक कला माना जा सकता है क्योंकि शिक्षाशास्त्रीय तर्क कल्पना, अंतर्ज्ञान और अभिव्यक्ति की माँग करता है। इस प्रकार, शिक्षाशास्त्र विधि या तकनीक से अधिक है। यह लगातार शिक्षार्थियों के अनुभव का निर्माण करता है।

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रुपरेखा (एनसीएफ–2005) के अनुसार, शिक्षक और छात्र के बीच जुड़ाव कक्षा में बहुत महत्वपूर्ण है क्योंकि इसमें यह वर्णन करने की शक्ति है कि किसके ज्ञान को विद्यालय से सम्बन्धित गतिविधियों के रूप में स्वीकार किया जाएगा। हमें यह समझना होगा कि सीखने वाले सिर्फ बच्चे नहीं हैं जिनके लिए वयस्कों को रणनीति तैयार करनी है। बल्कि, वे अपनी स्थितियों और जरूरतों का आलोचनात्मक अवलोकक होते हैं।इसलिए, उन्हें यह जानने की आवश्यकता है कि उनके अनुभव और धारणाएँ उनकी विचार प्रक्रियाओं और तर्क को विकसित करने में बहुत महत्वपूर्ण हैं। हमें यह भी स्वीकार करना चाहिए कि बच्चे अपनी सीखने की क्षमताओं, योग्यताओं के आधार पर कई चीजें सीखते हैं, और उनके ज्ञान का आधार नवीन शिक्षण वातावरण के संपर्क में आने से बढ़ता रहता है। अब, विद्यालय से बाहर के बच्चों को उनकी सीखने की क्षमता बढ़ाने के लिए विद्यालयों में लाने की आवश्यकता है। यह वंचित समुदायों के बच्चों, विशेषकर लड़कियों के लिए बहुत महत्वपूर्ण है।

सहभागी शिक्षण को कक्षा में एक निश्चित और महत्वपूर्ण स्थान दिया जाना चाहिए। हालांकि, कक्षा प्रक्रियाओं में सहभागी अधिगम शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया की एक

शक्तिशाली रणनीति है, लेकिन अपने औपचारिक प्रयोग के कारण अपनी शैक्षणिक बढ़त खो रहा है। अधिगम प्रक्रिया में सच्ची भागीदारी शिक्षार्थियों और शिक्षकों दोनों के अनुभवों के उपयोग से शुरू होती है। जब दोनों, बच्चे और शिक्षक निर्णय के डर के बिना अपने व्यक्तिगत और सामूहिक अनुभवों को साझा करते हैं, तो इससे उन्हें ऐसी चीजों के बारे में बेहतर सीखने का अवसर मिलता है जो शायद उनकी खुद की सामाजिक वास्तविकता का हिस्सा न हों। यह उन्हें डरने की बजाय उनके बीच के अंतर से सम्बन्धित होने और उन्हें समझने का अवसर देता है।

यदि शिक्षार्थियों के सामाजिक अनुभवों को शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया में लाया जाना है, तो शिक्षक को यह सुनिश्चित करना चाहिए कि द्वन्द्व के मुद्दों को कक्षा में उठाया जाए। द्वन्द्व भारत में कई बच्चों के जीवन का एक अनिवार्य हिस्सा है। वे लगातार ऐसी स्थितियों का सामना करते हैं जहाँ नैतिक मूल्यांकन और कार्रवाई की मांग की जाती हैं, चाहे वह स्वयं, परिवार और समाज से जुड़े द्वन्द्व के व्यक्तिपरक अनुभवों के सम्बन्ध में हो या विद्यालय के मुद्दों सबंधी द्वन्द्व हो।एक शैक्षणिक उपकरण के रूप में द्वन्द्व का उपयोग, बच्चों को द्वन्द्वों से निपटने, इसकी प्रकृति के बारे जानकारी देने तथा उनके जीवन में इसकी भूमिका के बारे में जागरूकता देने के लिए किया जाता है। इसका निर्माण शिक्षार्थियों को उनके वातावरण में मौजूद तत्वों के बारे में टिप्पणी करने, तुलना करने और सोचने के लिए प्रोत्साहित करके किया जा सकता है। इसके लिए, ज्ञान के विभिन्न स्रोतों जो विभिन्न माध्यमों, जैसे रेडियो, टेलीविजन, डिजिटल माध्यम, विज्ञापन, गीत, पेंटिंग आदि में मौजूद हैं, को कक्षा के दायरे में लाने की आवश्यकता है ताकि स्वयं शिक्षार्थियों के बीच एक समृद्ध बातचीत हो सके।एक शिक्षाशास्त्र जो लिंग, वर्ग, जाति और वैश्विक असमानताओं के प्रति संवेदनशील है, जो न केवल अलग–अलग व्यक्तियों के और सामूहिक अनुभवों की पुष्टि करता है, बल्कि शक्ति के बड़े सामाजिक ढांचे के भीतर भी इन असमानताओं का पता लगाता है, और कई प्रश्न उठाता है, जैसे कि किसका ज्ञान अधिक मूल्यवान है? इसके लिए विभिन्न शिक्षार्थियों के लिए विभिन्न रणनीतियों को विकसित करना आवश्यक है। उदाहरण के लिए, कक्षा में बोलने के लिए छात्रों को प्रेरित करना किसी के लिए बहुत महत्वपूर्ण हो सकता है, जबकि दूसरों के लिए दूसरों को सुनना उससे सीखना हो सकता है।

एक शिक्षाशास्त्र के रूप में, शिक्षक की मुख्य भूमिका शिक्षार्थियों को स्वयं को व्यक्त करने के लिए एक सुरक्षित स्थान प्रदान करना है, और साथ ही साथ आपस में खुलकर बातचीत करने के अवसर देना है। शिक्षकों को 'नैतिक प्राधिकार' (moral authority) की भूमिका से बाहर आने और समानुभूति पूर्ण और निर्णय के बिना सुनने और बच्चों को एक–दूसरे की बात सुनने के लिए सक्षम बनने की आवश्यकता है। रचनात्मक रूप से समझ की सीमाओं को बढ़ाते हुए, शिक्षार्थियों को इस बात के प्रति सचेत रहने की आवश्यकता है कि अंतर कैसे व्यक्त किए जाते हैं। एक भरोसेमंद वातावरण कक्षा को एक सुरक्षित स्थान बना देगा जहाँ शिक्षार्थी स्वतंत्र रूप से अनुभव साझा कर सकते हैं, जहाँ द्वन्द्व से सम्बन्धित मुद्दों को आसानी से स्वीकार किया जा सकता है और उन्हें संबोधित किया जा सकता है। विशेष रूप से, कम विशेषाधिकार प्राप्त समुदायों की लड़कियों और बच्चों के लिए, विद्यालयों और कक्षाओं का स्थान निर्णय लेने, पूछताछ, चर्चा आदि की प्रक्रियाओं पर चर्चा करने के लिए होना चाहिए।

अपनी प्रगति की जाँच करें 1

टिप्पणी: (क)अपने उत्तर को प्रत्येक विषय के पश्चात रिक्त स्थान में लिखिये।

(ख)अपने उत्तरों की तुलना इकाई के अंत में दिए गए उत्तरों से कीजिए।

i) क्या शिक्षाशास्त्र पाठ्यचर्या से सम्बन्धित है? कैसे?

.....

.....

.....

.....

.....

4.4.1 पाठ्यचर्या में शैक्षणिक विचार

एक समय था जब शिक्षक को ज्ञान का भंडार माना जाता था और जो इसे समाज के कई लोगों से रोककर कुछ के बीच वितरित कर सकता था। इसके प्रसार पर नियंत्रण की एक बड़ी शक्ति के साथ वे ज्ञान के निर्माता और संरक्षक दोनों थे। समाज में लगातार वैचारिक परिवर्तनों के साथ, हालिया शताब्दियों में, महत्वपूर्ण तकनीकी परिवर्तनों द्वारा, शिक्षक की भूमिका और स्थिति को फिर से परिभाषित किया गया है।शिक्षा में उनकी भूमिका स्पष्ट रूप से कम हो गई है। वह शिक्षा की प्रक्रिया के केंद्र से विस्थापित होने लगा है। शिक्षक, जिसे अक्सर अनुकरण के योग्य रोल मॉडल माना जाता था या शिक्षार्थी और ज्ञान की दुनिया के बीच एक महत्वपूर्ण मध्यस्थ होता है, अब एक पेशेवर के रूप में माना जाता है। ज्ञान का एक विस्फोट होता है तथा उनसे उस ज्ञान को छात्रों तक पहुंचाने की उम्मीद की जाती है तथा अब ज्ञान के निर्माण में उनका बहुत कम योगदान माना जाता है। न ही उनके पास सूचना का एकाधिकार है, विभिन्न प्रकार के स्रोतों में छात्रों को जानकारी देने और सूचना तथा ज्ञान के प्रसार करने के लिए प्रतिस्पर्धा चलती रहती है ।

कई शिक्षाविद शिक्षा की बाल केंद्रित प्रणाली जिसमें शिक्षक की भूमिका कम होती है का पक्ष लेते हैं। प्रकृतिवाद (Naturalism)पर रूसो (Rousseau) ने बहुत जोर दिया जिसने कई विचारकों को प्रेरित किया कि वे अपने विद्यार्थियों के सम्बन्ध में शिक्षक के लिए एक अलग भूमिका निभाएँ। पेस्तलोजी का शिक्षाशास्त्र (Pestalozzi's pedagogy) सशक्त रूप से बाल केन्द्रित है।फ्रोबेल की किंडरगार्टन प्रणाली (Froebel's kindergarten system) एक ऐसे शिक्षक की तलाश करती है, जो स्वयं के विचारों को छात्रों पर नहीं थोपता है बल्कि बच्चे के आत्म–विकास या 'स्व–गतिविधि' में आने वाली रुकावटों को दूर करने की दिशा में कार्य करता है। मांटेसरी (Montessori) विधि भी माता–पिता और शिक्षक के प्रभुत्व से बचने के लिए बच्चे की आवश्यकता पर जोर देती है। भारतीय संदर्भ में, टैगोर, गिजूभाई या कृ ष्णमूर्ति अपने तरीके से बाल–केंद्रित शिक्षा के प्रबल समर्थक रहे हैं।

फिर भी, इन सभी शिक्षाविदों द्वारा प्रस्तावित शिक्षाशास्त्रीय सिद्धांतों में, शिक्षक से एक अंतर्निहित अपेक्षा है, जो शायद पारंपरिक प्रणाली से अधिक है। शिक्षक को बच्चे को अधिक समझना चाहिए, उन्हें अधिक संवेदनशील और ग्रहणशील होना चाहिए और साथ ही, उसे अपनी नई भूमिका को अधिक उद्देश्यपूर्ण ढंग से निभाने के लिए अधिक

व्यवस्थित रूप से प्रशिक्षित करना होगा। शिक्षक की संभावित स्थिति के बारे में जो भी संदेह हो (पाउलो फ्रायर (Paulo Freire, 1970) सोचता है कि एक शिक्षक की बराबरी एक उत्पीड़नकर्ता, आदेश दाता या चीजों को मन मुताबिक मोड़ने वाले साथ की जा सकती है), पर फिर भी शिक्षा की कोई व्यवहार्य वैकल्पिक व्यवस्था अभी तक आश्वस्त रूप से प्रदर्शित नहीं हुई है जो शिक्षक या प्रशिक्षक को शैक्षिक प्रक्रिया से पूरी तरह बाहर करती हो।

यदि पाठ्यक्रम को व्यापक अर्थों में एक विद्यालय की अधिगम व्यवस्था की पूरी शृंखला के रूप में समझा जाता है, तो सबसे अधिक इसके साथ सम्बन्ध रखने वाला और इसे वास्तविक रूप देने के लिए सबसे बड़ी भूमिका निभाने वाला व्यक्ति स्वयं शिक्षक ही हैं। पाठ्यक्रम सुधार की कोई भी योजना उसकी सहमति और समर्थन के बिना सफल नहीं हो सकती। एक शिक्षक को शिक्षा व्यवस्था में जहाँ कहीं भी आवश्यक हो सुधार करने, शिक्षण–अधिगम के तरीकों को संशोधित करने, प्रयोग करने, नवाचार करने और अंत में परीक्षण त्रुटि विधि से शिक्षण कौशल या परिपक्वता हासिल करने की स्वतंत्रता होनी चाहिए। जब तक वह अपने प्रत्येक शिक्षार्थी को सीखने के लिए सही तरीकों को तैयार करने की अंतिम जिम्मेदारी का अधिकारी नहीं होगा, तब तक केवल प्रशासनिक निर्देश से शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार नहीं हो सकता है। बेशक, उसे अपनी आवश्यक पेशेवर क्षमता को बढ़ाकर कार्य के लिए पर्याप्त तैयारी की आवश्यकता होगी।

शिक्षा के क्षेत्र में एक बदलाव आया है, शिक्षाशास्त्र के इस बदले स्वरूप की शिक्षकों द्वारा सराहना अवश्य की जानी चाहिए। राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रुपरेखा, 2005 के संकेतानुसार, प्रमुख बदलावों को नीचे सारणीबद्ध किया गया है।

तालिका 4.1 : शिक्षण में हुए मुख्य बदलाव (राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रुपरेखा, 2005)

से	तक
शिक्षण	अधिगम
अध्यापक–केन्द्रित	शिक्षार्थी–केन्द्रित
शिक्षक ज्ञान प्रदान करता है	शिक्षार्थियों ने अधिगम में सक्रिय भागीदारी ली
पाठ्यचर्या का स्थिर डिजाइन है	लचीली विधियाँ और पाठ्यचर्या है
शिक्षक निर्देश देता है	स्वायत्त और स्वतंत्र होते हैं
अधिगम केवल पाठ्यपुस्तकों से ही होता है	विविध संभावित स्रोतों से अधिगम होता है
कक्षा के भीतर शिक्षण कार्य होता है	समाज और प्रकृति के व्यापक संदर्भ में अधिगम होता है
सुनने और पढ़ने से सीखना	करके सीखो
कुछ आवधिक परीक्षाओं के माध्यम से मूल्यांकन	सतत और व्यापक मूल्यांकन

विद्यालय में विभिन्न विषयों के शिक्षण और अधिगम के दृष्टिकोण स्वाभाविक रूप से उस विशेष विषय की प्रकृति पर निर्भर करेगा, लेकिन एक प्रासंगिक सवाल यह है कि हम किसी विषय में बच्चे की प्रगति के बारे में कितना महत्वाकांक्षी हो सकते हैं। बच्चों में अपनी प्रगति की क्षमता साथ ही साथ विभिन्न विषयों में सुविधाजनक स्तर जैसी दोनों स्थितियों के सन्दर्भ में व्यक्तिगत रूप से अंतर पाया है । बाल–केंद्रित शिक्षण का विचार बच्चों की योग्यता और क्षमता में अंतर के आधार पर आधारित है जिसे ध्यान में रखने की आवश्यकता है।प्रत्येक बच्चे को अपनी स्वयं की अंतर्निहित क्षमता को यथासंभव पूरी तरह से महसूस करने का अवसर होना चाहिए। विभिन्न व्यक्तियों के पास विभिन्न प्रकार की बुद्धि हो सकती है जो उनकी उपलब्धियों और यहाँ तक कि उनकी सीखने की शैलियों को प्रभावित करती है। हॉवर्ड गार्डनर ने अपने बहु–बुद्धि के सिद्धांत में नौ प्रकार की बुद्धि की पहचान की है, अर्थात्, मौखिक या भाषाई, तार्किक–गणितीय, अस्तित्वगत, शारीरिक–गतिज (बाडिलीकाइनेस्थेटिक), संगीतमय, स्थानिक दृश्यगत, प्रकृतिवादिक, अंतरावैयक्तिक और अन्तर्वैयक्तिक। यद्यपि बहु–बुद्धि सिद्धांत के अनुसार, शिक्षार्थी को सीखने के विविध प्रकार के अवसर मिलने चाहिए, साथ ही सभी बच्चों से सभी क्षेत्रों में समान अपेक्षाएँ नहीं हो सकतीं। एक बच्चा जिसके पास भाषा या एक कवि के रूप में विकसित होने की क्षमता हो उसे गणितज्ञ बनने के लिए मजबूर नहीं किया जाना चाहिए या इसके विपरीत एक गणितीय क्षमता वाले बच्चे को कवि बनने के लिए मजबूर नहीं किया जाना चाहिए।

अपनी प्रगति की जाँच करें 2

टिप्पणी: (क)अपने उत्तर को प्रत्येक विषय के पश्चात् दिए गए रिक्त स्थान में लिखिए।

(ख)अपने उत्तरों की तुलना इकाई के अंत में दिए गए उत्तरों से कीजिए।

i) राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रुपरेखा, 2005 के अनुसार शिक्षाशास्त्र में प्रमुख बदलाव क्या हैं?

.....

.....

.....

.....

.....

4.5 पाठ्यचर्या में विविध मुद्दे

इकाई 3 में हमने पाठ्यचर्या विकास और इसके सोपानों के बारे में चर्चा की है। पाठ्यचर्या विकास एक जटिल प्रक्रिया है जो विभिन्न मुद्दों और कारकों से प्रभावित होती है जैसे कि पाठ्यचर्या विकसित करने का उपागम क्या होना चाहिए – राष्ट्रीय या स्थानीय? क्या विद्यालयों को अपनी पाठ्यचर्या बनाने की स्वायत्तता होनी चाहिए? क्या हम प्रत्येक बच्चे के लिए समावेशी पाठ्यचर्या विकसित कर रहे हैं? पाठ्यचर्या विकसित करने से पहले हमारी आधारशिला क्या है? इस अनुभाग में, हम इन मुद्दों के बारे में संक्षेप में चर्चा करने का प्रयास करेंगे।

4.5.1 राष्ट्रीय बनाम स्थानीय पाठ्यचर्या

भारत आबादी, भूगोल, संस्कृति और सामाजिक जीवन की दृष्टि से एक विविधताओं वाला देश है। इसलिए, एक पाठ्यचर्या बनाते समय, हमारे देश में कई विविधताओं के कारण, हमेशा इस बात पर बहस होती है कि क्या हमारी पाठ्यचर्या एक राष्ट्रीय पाठ्यचर्या या स्थानीय/राज्य स्तर की होनी चाहिए। राष्ट्रीय पाठ्यचर्या के पक्ष के तर्क "एक राष्ट्र – एक पाठ्यचर्या" (वन नेशन – वन–कैरिकुलम) के मूल दर्शन पर केंद्रित हैं, ताकि प्रत्येक नागरिक के साथ समान ज्ञान साझा हो जो सभी को एक साथ बांधता हो। हालाँकि, स्थानीय पाठ्यचर्या के प्रवर्तकों का तर्क है कि भारत जैसे विविधता वाले देश के लिए एक ही पाठ्यचर्या पर्याप्त नहीं है। उदाहरण के लिए, भारत के उत्तर–पूर्वी हिस्से में रहने वाले एक बच्चे को उत्तरी मैदान में रहने वाले बच्चे की तुलना में अपने भौगोलिक परिवेश के बारे में बहुत अलग अनुभव हैं। इसलिए, बच्चों के अनुभवों को क्षेत्रीय संदर्भ से जोड़ने के लिए पाठ्यचर्या को स्थानीय विषयवस्तु के साथ पर्याप्त रूप से संदर्भित किया जाना चाहिए।

भारत में, हमने राष्ट्रीय स्तर पर एक राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा का सुझाव देकर और राष्ट्रीय और साथ ही क्षेत्रीय मुद्दों दोनों को ध्यान में रखते हुए अपना पाठ्यचर्या बनाने के लिए राज्यों को स्वायत्तता देने का सुझाव देकर एक मध्य मार्ग अपनाया है। पाठ्यचर्या के स्थानीयकरण में विषय और शिक्षा के उद्देश्यों दोनों के रूप में स्थानीय सामग्रियों का उपयोग शामिल होगा जहाँ स्थानीय संस्कृति पाठ्यचर्या का एक अभिन्न अंग होगी (पाठ्यचर्या विकास के लिए प्रशिक्षण उपकरण, यूनेस्को)। हालाँकि, हमें पाठ्यचर्या सामग्री को केवल स्थानीय अवधारणाओं और सामग्रियों के लिए कम नहीं करना चाहिए क्योंकि इससे बच्चों की शिक्षा सीमित हो जाएगी। इसलिए, एक, वैश्वीकृत प्रकार की पाठ्यचर्या की आवश्यकता होती है जहाँ वैश्विक या राष्ट्रीय मुद्दों को स्थानीय सामग्रियों, भाषाओं, मुद्दों और संदर्भों के साथ बुनकर प्रस्तुत करना चाहिए। इसलिए, पाठ्यचर्या में विविधता के मुद्दे को पाठ्यचर्या को मजबूती प्रदान करने वाले तत्वों के रूप में देखने की आवश्यकता है।

4.5.2 पाठ्यचर्या का संदर्भीकरण

कई शिक्षाविदों ने शिक्षा सन्दर्भीकरण करने के महत्व पर जोर दिया है। इस शब्द का एक सरल अर्थ है बच्चे की दुनिया के संदर्भ में अधिगम को स्थापित करना, और शिक्षार्थियों के विद्यालय और सामाजिक–सांस्कृतिक संदर्भ के बीच की खाई को पाटना। यह सिर्फ इसलिए नहीं है कि यह विभिन्न विषयों के अध्ययन में सन्दर्भीकरण को बच्चे के अपने अनुभवों रूपी सर्वश्रेष्ठ प्रविष्टि बिंदुओं के रूप में प्रदान करेगा, बल्कि इसलिए भी कि ज्ञान का मुख्य उद्देश्य शिक्षार्थी को दुनिया से जुड़ना है। इसके बिना, कोई भी ज्ञान मात्र जानकारी के स्तर तक का रह जाता है। शिक्षार्थियों के पास, कक्षा प्रथम में अपनी प्रविष्टि के दौरान, पहले से ही छोटे शब्दों, संख्याओं और प्रतीकों का एक समृद्ध भाषा आधार होता है। फिर भी, हम शायद ही इसे स्वीकार करते हैं और शायद ही कभी कक्षा में इसका उपयोग करते हैं। हम शायद ही छात्रों को अपने शिक्षण के दौरान विद्यालय के बाहर की दुनिया के बारे में बात करने के लिए कहते हैं।इसलिए, शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया में सन्दर्भीकरण समकालीन शिक्षा में पाठ्यचर्या के हस्तांतरण पर संकेन्द्रित है। बिहार पाठ्यचर्या की रूपरेखा–2008, जो एक राज्य स्तरीय–पाठ्यचर्या की रूपरेखा है, ने रूपरेखा में ग्रामीण शिक्षा पर एक विशेष अध्याय जोड़कर इस भावना को बखूबी दर्शाया है।

सन्दर्भीकरण (Contextualization) की अवधारणा इस विचार पर आधारित है कि शिक्षार्थी सबसे अच्छा तब सीखते हैं जब कक्षा के अनुभव उनके जीवन में अर्थ और प्रासंगिकता रखते हैं। जो चीजें शिक्षार्थियों से जुड़ी हैं, वे उन्हें सीखने में बेहतर मदद कर सकती हैं। यहाँ, करके सीखना, अनुप्रयुक्त अधिगम और प्रकलित अधिगम स्थानीयकरण और सन्दर्भीकरण को क्रियान्वित करने में बहुत ही सहायक होंगे। यदि शिक्षार्थियों को एक वास्तविक अधिगम वातावरण में अपने अनुसार जोड़–तोड़ करने, सम्बन्ध स्थापित करने और अनेक अधिगम अवसरों को चुनने की अनुमति मिलती है, उन्हें स्थानीयता या समुदाय के भीतर उपलब्ध विभिन्न संसाधन प्राप्त होते है, तो निश्चित तौर पर गहन अधिगम का आश्वासन और एहसास दिया जाएगा। यह शिक्षकों और शिक्षार्थियों को अवधारणाओं को समझने के लिए विभिन्न सन्दर्भीकृत मुद्दों के साथ जोड़ने और प्रस्तुत करने में मदद करेगा। इसके माध्यम से, कक्षाकक्ष शिक्षण को शिक्षकों द्वारा अच्छी तरह से अनुकूलित और विनियोजित किया जा सकता है। हालांकि, यह शिक्षकों से अधिक तैयारी की अपेक्षा रखता है ताकि शिक्षण के लिए सन्दर्भीकृत पाठ योजनाओं का उपयोग करने वे समर्थ हो सकें। इसके साथ ही, हम कई अवधारणाओं को तत्काल संदर्भों की अपेक्षा कुछ अलग विचारों और उदाहरणों से जोड़ कर बेहतर तरीके से समझ भी सकते हैं। इसलिए, सभी विषयवस्तुओं पर सन्दर्भीकरण लागू नहीं किया जाना चाहिए।

पाठ्यचर्या का सन्दर्भीकरण शिक्षाशास्त्र का एक अंतर्निहित हिस्सा होना चाहिए। पाठ्यचर्या को सन्दर्भीकृत करने के लिए, शिक्षक शिक्षार्थियों के जीवन सम्बन्धी स्थानीय सामग्रियों, गतिविधियों, रुचियों, मुद्दों और जरूरतों का प्रयोग करता है। एक पाठ्यचर्या शिक्षार्थियों को विशिष्ट कौशल और दक्षताओं को सीखने, अभ्यास करने और मूल्यांकन करने में मदद करता है, इसे पूरा करने के लिए सन्दर्भीकृत पाठ प्रभावी उपकरण हैं। एक सन्दर्भीकृत पाठ्यचर्या शिक्षार्थियों को समस्याओं और मुद्दों को सुलझाने और उनके बारे में खुलकर बात करने के साथ एक रणनीति विकसित करने के लिए एक कक्ष प्रदान करता है। पाठ्यचर्या को सन्दर्भीकृत करने के लिए कुछ प्रमुख कदमों को शामिल करना आवश्यक हैं जैसे कि शिक्षार्थियों की जरूरतों और मुद्दों की पहचान करना; सन्दर्भीकृत जानकारी और सामग्री एकत्र करना; सन्दर्भीकृत पाठ तैयार करना और पढ़ाना; और शिक्षार्थियों को उनकी वास्तविक दुनिया में सीखे गए ज्ञान का उपयोग करने के लिए प्रोत्साहित करना; और सन्दर्भीकृत पाठ को प्रतिबिंबित और पहुँच योग्य बनाना। पाठ्यचर्या के सन्दर्भीकरण में, सामाजिक–सांस्कृतिक शिक्षाशास्त्र बहुत मदद करता है। यह शैक्षणिक पद्धति अक्सर छात्र–केंद्रित दृष्टिकोण पर निर्भर करती है, जिससे शिक्षक शिक्षार्थियों की विभिन्न सामाजिक–सांस्कृतिक शक्तियों की पहचान करते हैं, और उन लोगों को यह सुनिश्चित करने के लिए पोषण करते हैं कि शिक्षार्थी स्वयं के बारे में सकारात्मक समझ रखते हैं, और अपेक्षित अधिगम के स्तर को प्राप्त कर सकते हैं।

4.5.3 पाठ्यचर्या सिद्धांत को अभ्यास (व्यवहार) से सम्बन्धित करना

एक शिक्षक अपने शिक्षार्थियों से अपेक्षा करता है कि वे न केवल सिद्धांत सीखें और समझें कि सिद्धांत क्यों महत्वपूर्ण हैं बल्कि यह भी सीखें कि सैद्धांतिक ढांचे को व्यवहार में कैसे लागू किया जाए। बहुत बार हम प्रशिक्षुता में छात्राध्यापकों के उपाख्यानात्मक वृत्तान्त सुनते हैं जो आत्मविश्वास और प्रभावशीलता के साथ सिद्धांत को अभ्यास में परिवर्तित करने में असमर्थ होते हैं। शायद सिद्धांत से व्यवहार में

परिवर्तन करने में कठिनाई, कम से कम आंशिक रूप से, पाठ्यचर्या विकासकर्ता या स्वयं शिक्षक की विफलता के कारण होती है क्योंकि वे एक ही पाठ्यचर्या में सिद्धांत और व्यवहार दोनों एकीकरण इस तरीके से नहीं कर पाते ताकि वह छात्रों के लिए प्रासंगिक और सार्थक हो। इस तरह के एकीकरण से शिक्षार्थियों को सैद्धांतिक अवधारणा को अधिगम के व्यावहारिक मूल्यों के साथ निकटता से जोड़ने में मदद मिलती है।

रचनावादी उपागम में, वर्तमान में हम आम तौर पर सिद्धांत और व्यवहार को दो अलग अवधारणों के रूप में नहीं देखते हैं, बल्कि हम इस संप्रत्यय को पाठ्यचर्या के दो पूरक पहलुओं के रूप में समझते हैं, जो प्रक्रिया मॉडल पर आधारित है। यह मॉडल सरल सिद्धांतों से प्रेरित है , जो सिद्धांत और व्यवहार का एकीकरण करके निर्णय और अर्थ–निर्माण पर जोर देता है, जिसे हम "प्राक्सिस" (Praxis) कहते हैं।

4.5.4 पाठ्यचर्या में सूचना एवं संप्रेषण प्रौद्योगिकी का एकीकरण

इस सदी में महान तकनीकी प्रगति के साथ, वर्तमान में प्रमुख फोकस पाठ्यचर्या में सूचना एवं संप्रेषण प्रौद्योगिकी(आई.सी.टी.) का एकीकरण करना है। आई.सी.टी. विस्फोट ने जानने की प्रकृति में बदलाव किया है, अब ज्ञान की प्रकृति को सूचना को याद करने की क्षमता से समस्याओं को परिभाषित करने की क्षमता में, चुनिंदा जानकारी को पुनः प्राप्त करने में और परिस्थिति के अनुकूल समस्याओं को हल करने की क्षमता में बदल दिया है। इसलिए, पाठ्यचर्या नियोजन में आई.सी.टी. के महत्व को व्यापक रूप से मान्यता दी गई है। आई.सी.टी. बच्चों को अपनी रचनात्मक कल्पना की खोज के नए अवसरों के साथ विभिन्न मल्टी–मीडिया माध्यमों द्वारा अपने स्वयं के अनुभव प्रस्तुत करने के अवसर प्रदान करती है। इस दिशा में, हमने कंप्यूटर से विभिन्न अनुकूलित अधिगम ऐप्स, अन्तःक्रियात्मक (इंटरैक्टिव) स्मार्ट (Interactive SMART) कक्षाएँ, आभासी (वर्चुअल) कक्षाएँ, आदि की प्रगति की है।शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया पर आई.सी.टी. का प्रभाव दिन–प्रतिदिन बढ़ रहा है और इसलिए शिक्षकों को कक्षा में इसका प्रभावी ढंग से उपयोग करने के लिए आई.सी.टी. के बारे में पर्याप्त प्रशिक्षण की जरूरत है। इसलिए, यह अधिगम की प्रकृति को कक्षा में विषयों में महारत हासिल करने की आवश्यकता से स्वयं की क्षमता अनुसार सीखने की आवश्यकता में बदल देता है। शिक्षकों और शिक्षार्थियों को अब यह सीखने की जरूरत है कि आई.सी.टी. समृद्ध वातावरण में कैसे सीखें और पाठ्यचर्या की सामग्री में ऐसे अवसरों को उचित स्थान देना चाहिए।

4.5.5 पाठ्यविषयी अनुसंधान और अभ्यास (व्यवहार) के लिए मानकों की स्थापना

एक अन्य मुद्दा पाठ्यविषयी अनुसंधान और अभ्यास (व्यवहार) के लिए मानकों की स्थापना से सम्बन्धित है जो शिक्षार्थियों के लिए पाठ्यचर्या की गुणवत्ता में सुधार के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। पाठ्यचर्या को प्रभाव और इसके कार्यान्वयन को आकार देने के लिए इस तरह के संकेन्द्रित शोध अत्यधिक महत्वपूर्ण हैं। भारत में, विभिन्न सरकारी अभिकरणों जैसे एनसीईआरटी, एससीईआरटी या विश्वविद्यालय आदि पाठ्यचर्या के मुद्दों पर शोध करने में प्रमुख भूमिका निभा रहे हैं। लेकिन फिर भी हमारे देश में पाठ्यचर्या के मानकों सम्बन्धी शोध की कमी है। इसके लिए बुनियादी दिशानिर्देश तैयार करने की आवश्यकता है और शोधकर्ताओं को पाठ्यचर्या के बारे में

गुणवत्तापूर्ण अध्ययन करने के लिए प्रोत्साहित किया जाना चाहिए। पाठ्यचर्या कार्यान्वयन पर क्षेत्र आधारित शोध को भी बढ़ावा दिया जाना चाहिए।

अपनी प्रगति की जाँच करें 3

टिप्पणीः (क) अपने उत्तर को प्रत्येक विषय के पश्चात् दिए गए रिक्त स्थान में लिखिये।

(ख) अपने उत्तरों की तुलना इकाई के अंत में दिए गए उत्तरों से कीजिए।

i) पाठ्यचर्या के विभिन्न मुद्दों का उल्लेख कीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

4.6 प्रमुख पाठ्यचर्या ढाँचे/रूपरेखाएँ

बच्चों के अधिगम सम्बन्धित कुछ बुनियादी सिद्धांत हैं, जो आज कई शिक्षाविदों के पक्ष में हैं। उन सिद्धांतों के आधार पर, पाठ्यचर्या के अनेक प्रकार के ढाँचे विद्यमान हैं। यहां, हम ढाँचे/रूपरेखा के एक बहुत महत्वपूर्ण मॉडल पर चर्चा कर रहे हैं, अर्थात् राष्ट्रीय पाठ्यचर्या ढाँचा/रूपरेखा 2005 के साथ एकीकृत पाठ्यचर्या ढाँचा/रूपरेखा (इन्टीग्रेटेड करिकुलम फ्रेमवर्क) की।

4.6.1 एकीकृत पाठ्यचर्या ढाँचा/रूपरेखा

एक एकीकृत पाठ्यचर्या अक्सर बच्चों को विषय सीमाओं द्वारा लगाए गए प्रतिबंधों के बिना, समग्र रूप से सीखने की अनुमति देती है। एकीकृत शिक्षण और अधिगम प्रक्रिया बच्चों को सभी बुनियादी कौशलों को हासिल करने तथा उनका उपयोग करने में सक्षम बनाती है, और पूरे प्राथमिक ग्रेड में निरंतर सफलतापूर्वक सीखने के लिए सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित करने के लिए बहुत लाभदायक है। एक एकीकृत कार्यक्रम में ऐसे प्रभावी अनुभव सम्मिलित हैं, जो बच्चों के दृष्टिकोण, कौशल और ज्ञान को विकसित करने और पाठ्यचर्या से सम्बन्ध स्थापित करने में मददगार हैं। एक एकीकृत पाठ्यक्रम में ऐसी गतिविधियों को खूबसूरती से डिजाइन किया गया है जो क्षमताओं की शृंखला प्रदान करती हैं। इसके अतिरिक्त, इस तरह की पाठ्यचर्या में शिक्षक–पहल और निर्देशित और बाल–पहल और निर्देशित दोनों ही प्रकार की गतिविधियाँ संपन्न की जाती हैं। एकीकृत पाठ्यचर्या रुपरेखा में संपूर्ण कक्षा, छोटा समूह और व्यक्तिगत अनुभव, आलोचनात्मक और रचनात्मक सोच के लिए अवसर, सार्थक संपूर्ण अधिगम पर ध्यान दिया गया है। यह रुपरेखा मूल्यांकन के विभिन्न रूपों जैसे शिक्षक, सहपाठी और स्व–मूल्यांकन पर भी जोर देता है।

एकीकरण को केवल विभिन्न उपागमों जैसे कि बहु–विषयक, अंतःविषयक और ट्रांसडिसिप्लिनरी के माध्यम से विभिन्न विषयों के सम्मिश्रण या एकीकरण के रूप में

समझा जा सकता है। एक बहुविषयक उपागम में, हम आम तौर पर विभिन्न विषयों के प्रासंगिक ज्ञान जो एक ही प्रसंग से सम्बन्धित हों को व्यवस्थित करते हैं (चित्र 4.1 देखें)। बहु–विषयक पाठ्यचर्या विकसित करने के विभिन्न तरीके हैं, और वे एकीकरण प्रयास की गहनता के स्तर पर एक–दूसरे से भिन्न हैं। इस बहु–विषयक उपागम में, हम कौशल, ज्ञान, या यहाँ तक कि अभिवृत्ति को एक पाठ्यचर्या में एकीकृत कर सकते हैं। दूसरी ओर, एकीकरण के अंतःविषयक उपागम में, पाठ्यचर्या को विषयों के सामान्य अधिगम के अनुसार आयोजित किया जाता है (चित्र 4.2 देखें)। यहाँ विषय पहचान योग्य हैं, हालांकि ये बहु–विषयक की तुलना में कम महत्व रखते हैं। इनके साथ–साथ, एकीकरण का ट्रांसडिसिप्लिनरी (Transdisciplinary) उपागम, विषयों के बीच सभी सीमाओं को तोड़ता है और सीधे कोर मुद्दों पर (चित्र 4.3 देखें) पर संकेंद्रित रहता है। इस तरह का उपागम परियोजना कार्य को बढ़ावा देता है।

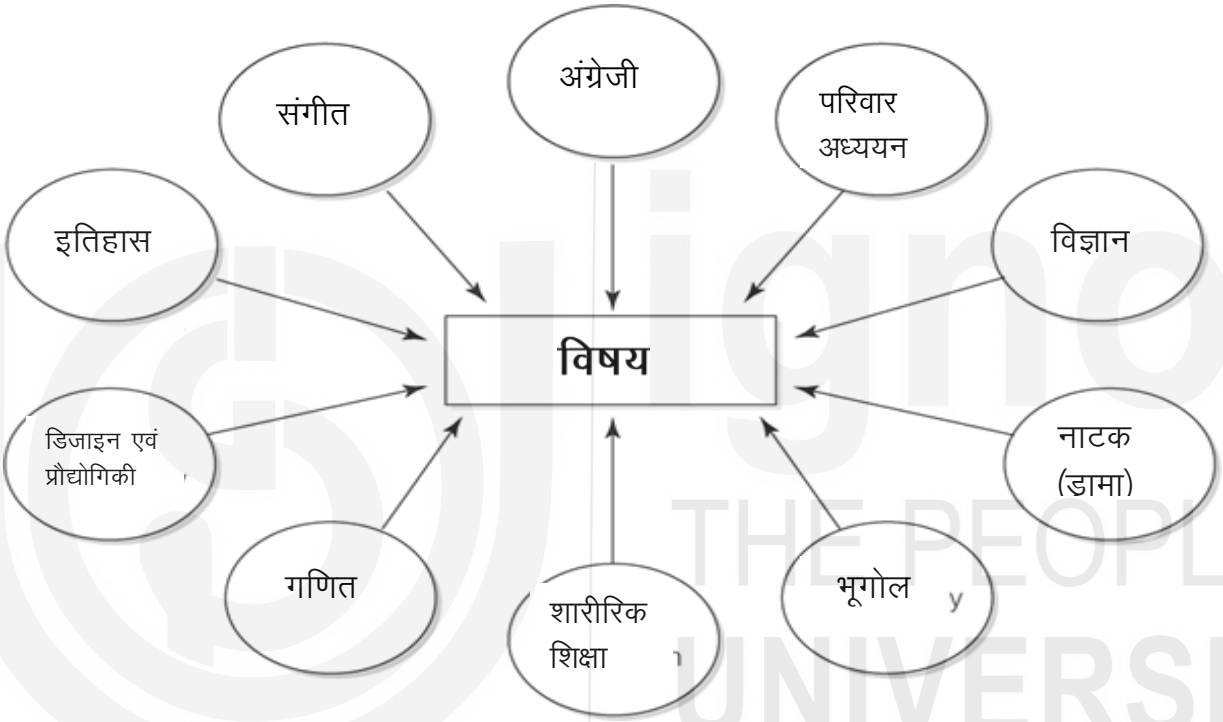

चित्र 4.1: बहु–विषयक उपागम

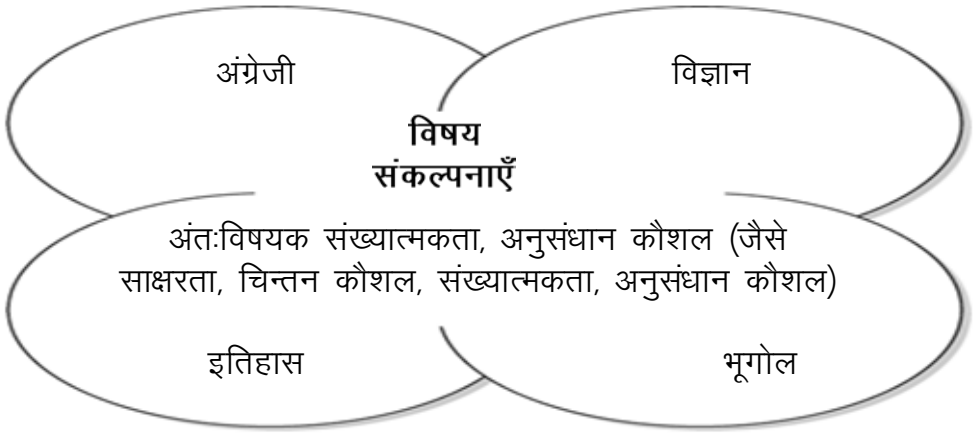

चित्र 4.2: अंतःविषयक उपागम

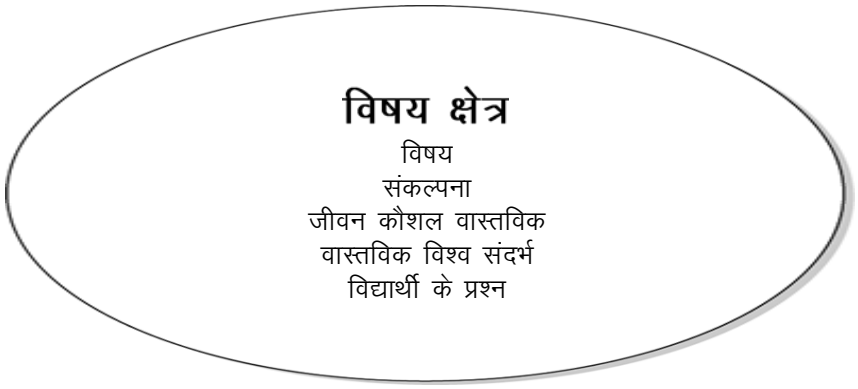

चित्र 4.3: ट्रांसडिसिप्लिनरी –**(Transdisciplinary)**उपागम

स्रोतः http://www.ascd.org/publications/books/103011/chapters/What-Is-Integrated-Curriculum%C2%A2.aspx

उपर्युक्त उपागम किसी भी स्तर पर पाठ्यचर्या को एकीकृत करने में बहुत सहायक होगा। उदाहरण के लिए, एकीकृत पाठ्यचर्या में यदि हम पक्षियों के बारे में सीख रहे हैं, तो यह केवल जीव विज्ञान तक ही सीमित नहीं है, बल्कि एक एकीकृत पाठ्यचर्या पक्षियों के अन्य पहलुओं जैसे पारिस्थितिकी तंत्र में उनकी भूमिका, पक्षियों से सम्बन्धित कविताएं, हमारे जीवन में उनके महत्व आदि के बारे में जानने की आवश्यकता को भी पूरा करती है। पाठ्यचर्या को एकीकृत करने का एक अन्य उपागम परियोजना पद्धति है। परियोजनाओं में एक विषय की जांच की जाती है लेकिन यह पारंपरिक विषयगत इकाइयों से भिन्न होती है क्योंकि वे पूरी तरह से एकीकृत होती हैं। परियोजना योजना में, विषयों को आसानी से कार्यात्मक स्तर पर जोड़ा जा सकता है। इसका लक्ष्य कुछ सीखना, सभी उपलब्ध संसाधनों का उपयोग करना और उस लक्ष्य को पूरा करने के लिए आवश्यक कौशल, ज्ञान और स्वाभाविकता को समाविष्ट करना है। एक अन्य तरीका जिसमें शिक्षक एकीकृत पाठ्यचर्या की योजना बनाते हैं, जिसमें वे, बच्चे की (या छोटे समूह के) रूचि और दुनिया के बारे में जिज्ञासा के आधार पर उन्हें स्वतंत्र और छोटे समूह अध्ययन की अनुमति देते हैं। इसका उद्देश्य बच्चों को स्वतंत्र शिक्षार्थी बनने में मदद करना है। बच्चा या बच्चों का एक छोटा समूह स्वतः ही विषयों की शुरुआत कर सकता है। शिक्षक संसाधन प्रदान करता है और व्यक्तिगत रूप से या कक्षा निर्देश के माध्यम से आवश्यक कौशल और रणनीतियों को सिखाता है। ये एकीकृत पाठ्यचर्या ढाँचा/रूपरेखा के बारे में कुछ प्रमुख बिंदु हैं।

अपनी प्रगति की जाँच करें 4

टिप्पणीः (क)अपने उत्तर को प्रत्येक विषय के पश्चात् दिए गए रिक्त स्थान में लिखिए।

(ख)अपने उत्तरों की तुलना इकाई के अंत में दिए गए उत्तरों से कीजिए।

i) एकीकृत पाठ्यचर्या रुपरेखा के क्या लाभ हैं?

.....

.....

.....

.....

.....

.....

4.6.2 राष्ट्रीय पाठ्यचर्या ढाँचा/रूपरेखा–2005

पाठ्यचर्या में एकीकरण के लिए इन दृष्टिकोणों में से कुछ को राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रुपरेखा–2005 में प्रभावपूर्ण ढंग से व्यक्त किया गया है। सीखने से सम्बन्धित निम्नलिखित तीन महत्वपूर्ण विचारों को संक्षेप में नीचे प्रस्तुत किया गया हैः

क) एक सक्रिय और प्राकृतिक शिक्षार्थी के रूप में बच्चे की प्रधानता

यह लगभग सार्वभौमिक रूप से मान्य है कि प्रत्येक बच्चे में सीखने की एक स्वाभाविक इच्छा और क्षमता होती है, जो लगभग स्वायत्त रूप से भाषा सीखने के तरीके से आसानी से प्रदर्शित होता है। बाल–केंद्रित शिक्षाशास्त्र के विचार का अर्थ है बच्चों के अनुभवों, उनके विचार और उनकी सक्रिय भागीदारी को प्राथमिकता देना। हमारे पारंपरिक विद्यालयों में, बच्चों के अनुभवों को आम तौर पर महत्व नहीं दिया जाता है क्योंकि शिक्षक को जो भी जानने योग्य है ऐसे सारे ज्ञान का भंडार माना जाता है, और बच्चों की आवाज को अनुशासन और व्यवस्था के नाम पर दबा दिया जाता है और उन्हें निष्क्रिय शिक्षार्थियों में बदल दिया जाता है। यह परिदृश्य पूरी तरह से बदलना चाहिए। प्रत्येक बच्चे की पारिवारिक और सामाजिक पृष्ठभूमि होती है और अधिगम की एक अपरिहार्य सामाजिक भूमिका होती है। इसलिए, प्रत्येक बच्चे को इस बात के लिए महत्व दिया जाना चाहिए कि वह क्या है और वह विद्यालय में क्या लेकर आता है/आती है। विद्यालयों को अधिगम प्रक्रिया में बच्चों की सक्रिय भागीदारी को प्रोत्साहित करना चाहिए। अपनी जिज्ञासा को संतुष्ट करने के लिए उन्हें कार्य करना चाहिए, सवाल पूछना चाहिए और स्वयं खोज करनी चाहिए।

ख) ज्ञान के निर्माण की प्रक्रिया के रूप में अधिगम

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रुपरेखा2005 द्वारा अपनाए गए रचनावादी परिप्रेक्ष्य में, अधिगम ज्ञान के निर्माण की एक प्रक्रिया है। इससे यह विचार उत्पन्न होता है कि शिक्षार्थी अपने द्वारा प्रस्तुत सामग्रियों और गतिविधियों के आधार पर नए विचारों को मौजूदा ज्ञान में मिला कर सक्रिय रूप से अपने ज्ञान का निर्माण करते हैं। विचारों की संरचना और पुनर्गठन रचनात्मक अधिगम की विशेषताएँ हैं। हालाँकि, एक सामाजिक पहलू यह भी है कि समूह में ज्ञान का निर्माण किया जा सकता है। इसलिए, इसमें सहयोगात्मक शिक्षा और सामाजिक निर्माण के अर्थ के लिए भी गुंजाइश है।

एक अच्छा शिक्षक सक्रिय रूप से ज्ञान निर्माण की ऐसी प्रक्रिया का समर्थन और सुविधा देता है, जिसमें एक बच्चा संलग्न हो सके। बच्चों को प्रश्न पूछने की अनुमति देना, उन्हें अपने शब्दों में, अपने स्वयं के अनुभवों से उत्तर देने के लिए प्रोत्साहित करना और उन्हें भली–भांति चुने हुए

चुनौतीपूर्ण कार्यों में संलग्न करना उन्हें अपनी समझ विकसित करने में मदद करेगा। दूसरी ओर, उन्हें केवल प्रश्नों के उत्तर देने के लिए सीमित करना और वह भी, पुस्तकों में लिखे गए शब्दों या शिक्षक द्वारा कहे गए शब्दों में और उनसे जो कुछ भी पढ़ाया जाता है उसे याद करने और पुनः पेश करने की अपेक्षा रखना, निश्चित रूप से उचित समझ के साथ सीखने में बाधा डालने के तरीके हैं।

ग) पारस्परिक क्रिया और संवाद के माध्यम से सीखना एक महत्वपूर्ण शिक्षाशास्त्र की ओर ले जाता है:

अधिगम हमारे आसपास के वातावरण, अर्थात् प्रकृति, वस्तुओं और लोगों के साथ निरंतर दोनों क्रियाओं और भाषा के माध्यम से होता है। साथियों द्वारा या वयस्कों की कंपनी में, हमारे स्वयं के द्वारा चलना, तलाशना और कार्य करने की हमारी शारीरिक गतिविधियां, और भाषा का उपयोग पढ़ने , स्पष्ट बोलने, पूछने, सुनने और बातचीत करना – कुछ मुख्य प्रक्रियाएँ हैं जिनके माध्यम से अधिगम प्रक्रिया होती है। जबकि संवाद, शिक्षक की ओर से एक तरफा संचरण की बजाय, बच्चे को कक्षा की गतिविधि में संलग्न करेगा और उसे सोचने और प्रतिबिम्बित करने के लिए प्रेरित करेगा। राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005 का मानना है कि आलोचनात्मक शिक्षाशास्त्र अपने राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक और नैतिक पहलुओं के संदर्भ में किसी भी मुद्दे पर गंभीर रूप से प्रतिबिंबित करने के कई अवसर देता है। आलोचनात्मक शिक्षाशास्त्र खुली चर्चा के माध्यम से, शिक्षार्थियों के कई विचारों को प्रोत्साहित करने और पहचानने के द्वारा सामूहिक निर्णय लेने की सुविधा प्रदान करता है।

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005 में शिक्षा के विभिन्न स्तर के लिए पाठ्यचर्या के विभिन्न प्रकारों पर चर्चा की गई है। इसके अनुसार, प्राथमिक स्तर के लिए, एक बच्चे को अपने आसपास की दुनिया का पता लगाने के लिए सुरक्षित स्थान देकर आनंदपूर्ण अधिगम में संलग्न होना चाहिए। इस स्तर पर, मुख्य उद्देश्य आसपास के (प्राकृतिक वातावरण, कलाकृतियों और लोगों के) बारे में बच्चे की जिज्ञासा को बढ़ाना है, अवलोकन, वर्गीकरण, अनुमान, आदि के माध्यम से बुनियादी संज्ञानात्मक और मनोगत्यात्मक कौशल प्राप्त करने के लिए उनके साथ व्यावहारिक गतिविधियाँ करना है; और बुनियादी भाषा कौशल विकसित करना अर्थात बोलना, पढ़ना और लिखना। इसी तरह, विज्ञान और सामाजिक विज्ञान को "पर्यावरण अध्ययन" के साथ–साथ स्वास्थ्य और स्वच्छता के महत्वपूर्ण घटकों के रूप में एकीकृत किया जाना चाहिए। प्राथमिक स्तर पर औपचारिक आकलन और मूल्यांकन का कोई दबाव नहीं होना चाहिए।

उच्च प्राथमिक स्तर की ओर बढ़ते हुए, शिक्षार्थी को परिचित अनुभवों, व्यावहारिक गतिविधियों, और सरल तकनीकी मॉडल (जैसे भार उठाने के लिए पवनचक्की के कामकाजी मॉडल) को डिजाइन करने के माध्यम से विज्ञान के सिद्धांतों को सीखने में संलग्न होना चाहिए। शिक्षार्थियों को गतिविधियों और सर्वेक्षणों के माध्यम से प्रजनन और यौन स्वास्थ्य सहित पर्यावरण और स्वास्थ्य के बारे में अधिक सीखना जारी रखना चाहिए। विद्यालयों और पड़ोस में सामूहिक गतिविधियों, साथियों और शिक्षकों के

साथ विचार–विमर्श, सर्वेक्षण, आँकड़ों का संगठन और प्रदर्शनियों के माध्यम से प्रदर्शन आदि के द्वारा इस स्तर पर शिक्षाशास्त्र के महत्वपूर्ण घटकों के रूप में बढ़ावा दिया जाना चाहिए। इकाई परीक्षणों, सत्रांत परीक्षणों के रूप में निरंतर और साथ ही समयावधि पर मूल्यांकन होना चाहिए।

माध्यमिक स्तर पर, विज्ञान को एक समग्र विषय के रूप में सीखने और हाथों और उपकरणों के साथ काम करने के लिए पिछले चरण की तुलना में अधिक उन्नत तकनीकी मॉडल डिजाइन करने पर ध्यान केंद्रित किया जाना चाहिए। प्रजनन और यौन स्वास्थ्य सहित पर्यावरण और स्वास्थ्य से सम्बन्धित मुद्दों की गतिविधियों और विश्लेषणों को भी केंद्रीय सामग्री के रूप में लिया जाना चाहिए। इस स्तर पर व्यवस्थित प्रयोग हेतु पाठ्यचर्या को विभिन्न सिद्धांतों, सूत्रों और अवधारणाओं को खोजने और सत्यापित करने और विज्ञान और प्रौद्योगिकी से जुड़े स्थानीय महत्वपूर्ण मुद्दों पर काम करने वाले एक उपकरण के रूप में बढ़ावा देना चाहिए।

उच्चतर माध्यमिक स्तर पर, यह रूपरेखा विज्ञान की पहचान प्रयोगों/प्रौद्योगिकी और समस्या समाधान विधि से उसके अलग–अलग विषयों जैसे भौतिकी, रसायन विज्ञान, वनस्पति विज्ञान, प्राणि–विज्ञान आदि के माध्यम से करने की समर्थन करती है। वर्तमान दो वर्ग, शैक्षणिक और व्यावसायिक, राष्ट्रीय शिक्षा नीति–1986 के अनुसार, चल रहे हैं राष्ट्रीय शिक्षा नीति – 2020 के वर्तमान परिदृश्य में नए सिरे से देखने की आवश्यकता हो सकती है। जैसा कि नई नीति सिफारिश कर रही है कि शिक्षार्थी बिना किसी प्रतिबंध के माध्यमिक स्तर पर अपनी रुचि के विभिन्न विषयों को स्वतंत्र रूप से चुन सकते हैं। पाठ्यचर्या भार के युक्तीकरण से सम्बन्धित मुद्दा भी इस चरण के लिए बहुत महत्वपूर्ण है ताकि शिक्षार्थियों के पास विविध गतिविधियों में भाग लेने के लिए पर्याप्त समय हो। इस चरण के दौरान, मुख्य विषयों को पहले से ही तैयार किया जाना चाहिए।

अपनी प्रगति की जाँच करें 5

टिप्पणी: (क)अपने उत्तर को प्रत्येक दिए गए विषय के पश्चात् रिक्त स्थान में लिखिए।

(ख)अपने उत्तरों की तुलना इकाई के अंत में दिए गए उत्तरों से कीजिए।

i) राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005 के मुख्य विचारों की संक्षेप में परिचर्चा कीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

4.7 राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 2020 और शिक्षाशास्त्र

पिछली इकाई में, हमने राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP), 2020 द्वारा अनुशंसित शिक्षा के विभिन्न चरणों के बारे में चर्चा की है। अब हम शिक्षा के विभिन्न चरणों में शिक्षाशास्त्र के सम्बन्ध में राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 2020 के महत्व को समझते हैं। विद्यालयी शिक्षा की पाठ्यचर्या सम्बन्धी और शैक्षणिक संरचना को उनके विकास के विभिन्न चरणों में शिक्षार्थियों के विकास की जरूरतों और हितों के प्रति संवेदनशील और प्रासंगिक बनाने के लिए फिर से जोड़ा जाएगा, विशेष रूप से क्रमशः 3–8, 8–11, 11–14 और 14–18 वर्ष की आयु सीमा तक।

आधारभूत चरण लचीले, बहुस्तरीय, खेल/गतिविधि–आधारित अधिगम और प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल एवं शिक्षा (Early childhood care and education - *ECCE*) की पाठ्यचर्या और शिक्षाशास्त्र पर जोर देगी। प्रारंभिक अवस्था, आधारभूत चरण के खेल के लिए तैयार करने, खोजने, गतिविधि–आधारित शैक्षणिक और पाठ्यचर्या शैली पर ध्यान केंद्रित करती है। यह चरण पढ़ने, लिखने, बोलने, शारीरिक शिक्षा, कला, भाषा, विज्ञान और गणित सहित विषयों में एक ठोस आधार तैयार करने के लिए कुछ हल्की पाठ्यपुस्तकों के साथ–साथ अधिक औपचारिक लेकिन अन्तःक्रियात्मक कक्षा अधिगम के पहलुओं को भी शामिल करना शुरू कर देगा। पूर्व माध्यमिक स्तर प्रारंभिक चरण की शैक्षणिक और पाठ्यचर्या सम्बन्धी शैली के निर्माण पर जोर देता है, लेकिन प्रत्येक विषय में अधिक अमूर्त अवधारणाओं के अधिगम और चर्चा के लिए विषय शिक्षकों की पहचान के साथ, ताकि छात्र इस स्तर पर विभिन्न विषयों विज्ञान, गणित, कला, सामाजिक विज्ञान और मानविकी के लिए तैयार हो जाए। विशिष्ट विषयों और विषय अध्यापकों की पहचान की बजाए प्रत्येक विषय के भीतर अनुभवजन्य अधिगम और विभिन्न विषयों के मध्य सम्बन्धों की खोज करने को प्रोत्साहित और बलित किया जाएगा। माध्यमिक स्तर का फोकस बहुविषयक अध्ययनों पर है, माध्यमिक स्तर की विषय–उन्मुख शैक्षणिक और पाठ्यचर्या सम्बन्धी शैली का निर्माण करना, लेकिन अधिक गहराई के साथ, अधिक आलोचनात्मक सोच, जीवन की आकांक्षाओं पर अधिक ध्यान केंद्रित करना, अधिक लचीलापन और छात्र की विषयों सम्बन्धी पसंद को केन्द्रित करते हुए।

सभी चरणों में पाठ्यचर्या और शिक्षाशास्त्र में सुधार न केवल संज्ञानात्मक विकास पर होगा बल्कि इक्कीसवीं सदी के कौशल से लैस छात्रों के समग्र विकास पर भी होगा। आधारभूत चरण से आगे सभी पाठ्यचर्या और शिक्षाशास्त्र भारतीय और स्थानीय संदर्भ के मूल में और संस्कृति, परंपराओं, विरासत, रीति–रिवाजों, भाषा, दर्शन, भूगोल, प्राचीन और समकालीन ज्ञान, सामाजिक और वैज्ञानिक आवश्यकताओं, अधिगम, देशज और पारंपरिक तरीके आदि के सन्दर्भ में पुनः डिजाइन किए जाएँगे।यह सुनिश्चित करने के लिए है कि शिक्षा छात्रों के लिए अधिक से अधिक सम्बन्धित, प्रासंगिक, दिलचस्प और प्रभावी हो। कहानियों, कलाओं, खेलों, उदाहरणों, समस्याओं आदि को यथासंभव भारतीय और स्थानीय भौगोलिक संदर्भ में निहित करने के लिए चुना जाएगा। विशेष रूप से, कक्षा 11–12 के छात्रों को व्यावसायिक या किसी अन्य पाठ्यक्रम को आगे बढ़ाने का अवसर मिलेगा, जिसमें एक अधिक विशिष्ट विद्यालय भी शामिल है, यदि ऐसा हो तो। यह उल्लेखनीय है कि ये चरण विशुद्ध रूप से पाठ्यचर्या सम्बन्धी और शैक्षणिक प्रकृति के हैं, जिन्हें छात्रों के संज्ञानात्मक विकास के आधार पर अधिगम को अनुकूलित करने के लिए डिजाइन किया गया है।

उच्च शिक्षा संस्थानों (Higher Education Institutions - HEIs) के लिए, राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 2020 अनुशंसा करती है कि सभी छात्रों के लिए एक उद्दीपक और आकर्षक सीखने के अनुभव को सुनिश्चित करने के लिए संस्थानों और प्रेरित संकाय द्वारा पाठ्यचर्या और शिक्षाशास्त्र को डिजाइन किया जाएगा, और लक्ष्यों को आगे बढ़ाने के लिए प्रत्येक कार्यक्रम में निरंतर रचनात्मक मूल्यांकन का उपयोग किया जाएगा। यह नीति उच्च शिक्षा स्तर पर शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया के लिए बहु–विषयक उपागम को लागू करने पर भी जोर देती है। प्रभावी अधिगम के लिए, चयन आधारित क्रेडिट प्रणाली (Choice Based Credit System - CBCS) को नवोन्मेष और लचीलेपन के लिए संशोधित किया जाएगा। उच्च शिक्षा संस्थान एक मानदंड–आधारित ग्रेडिंग प्रणाली की ओर बढ़ेंगे, जो प्रत्येक कार्यक्रम में अधिगम के लक्ष्यों के आधार पर छात्र की उपलब्धि का आकलन करते हैं, जिससे यह प्रणाली निष्पक्ष होती है और परिणाम की तुलना अधिक हो पाती है। उच्च स्तरीय परीक्षाओं से हटकर उच्च शिक्षा संस्थान अधिक सतत और व्यापक मूल्यांकन की ओर बढ़ेंगे।

(**स्रोतः** राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 2020. मानव संसाधन और विकास मंत्रालय, भारत सरकार)

4.8 चयन आधारित क्रेडिट प्रणाली (च्वायस बेस्ड क्रेडिट सिस्टम – सी बी सी एस)

भारत में वर्तमान उच्च शिक्षा पाठ्यक्रम शिक्षार्थियों को रोजगार योग्य नहीं बनाता है। पारंपरिक, वार्षिक पद्धति में शिक्षक–केंद्रित दृष्टिकोण का इस्तेमाल किया गया। वार्षिक व्यवस्था में स्वतंत्र चिंतन को बढ़ावा नहीं दिया गया। उभरते सामाजिक–आर्थिक परिवेश में पाठ्यचर्या में लचीलापन, शिक्षार्थियों की गतिशीलता के साथ विषयी उपागम को शामिल किया जाना चाहिए। चयन आधारित क्रेडिट प्रणाली स्नातक और स्नातकोत्तर पाठ्यक्रमों के लिए बहु–विषयक उपागम पेश करता है। शिक्षार्थी अपनी पसंद के विषय में महारत हासिल करने के लिए एक विस्तृत श्रृंखला में से विषयों का चयन कर सकते हैं।

हालाँकि, भारतीय शिक्षा प्रणाली को भी चयन आधारित क्रेडिट प्रणाली को लागू करने में कई चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है। सीबीसीएस के मूल तत्वों में सेमेस्टर प्रणाली, क्रेडिट प्रणाली, क्रेडिट स्थानांतरण, व्यापक और निरंतर मूल्यांकन और ग्रेडिंग हैं। चयन आधारित क्रेडिट प्रणाली (सी बी सी एस) के तहत, शिक्षार्थी तीन प्रकार के पाठ्यक्रमों का अनुसरण करते हैं – अनिवार्य फाउंडेशन पाठ्यक्रम (सीधे अध्ययन के विषय से सम्बन्धित), ऐच्छिक पाठ्यक्रम (जो अंतर्विषयक अध्ययन को अनुमति देता है) और कोर विषय, जहाँ मुख्य विषयों को हर सत्र में अनुसरण अनिवार्य है और अपने विषयों से असम्बन्धित विषयों के समूह से ऐच्छिक विषय चुने जाते हैं। इसका मतलब है कि विज्ञान का छात्र वैकल्पिक के रूप में वाणिज्य या कला विषय के किसी भी विषय को चुन सकता है।

यूजीसी के अनुसार, चयन आधारित क्रेडिट प्रणाली के मुख्य उद्देश्य हैं:

- उच्च शिक्षा में सुधार लाना;
- सीखने के अवसरों में वृद्धि;

- शिक्षार्थियों की शैक्षिक आवश्यकताओं और आकांक्षाओं का मिलान करें;
- शिक्षार्थियों की अंतर–विश्वविद्यालयी हस्तांतरणीयता को सक्षम बनाना;
- शिक्षा की गुणवत्ता और उत्कृष्टता में सुधार;
- पाठ्यक्रम पूरा करते समय अधिक लचीलापन लाना; तथा
- देश भर में शैक्षिक कार्यक्रमों को मानकीकृत और तुलनीय बनाना।

4.8.1 चयन आधारित क्रेडिट प्रणाली का अवधारणात्मक ढाँचा/रूपरेखा

शिक्षा प्रणाली में लचीलेपन की अनुमति देने की आवश्यकता है, ताकि शिक्षार्थी अपनी रुचि के आधार पर बहुविषयक, अन्तर्विषयक और कौशल–आधारित पाठ्यक्रम चुन सकें। यह चयन आधारित क्रेडिट प्रणाली के माध्यम से संभव है। चयन आधारित क्रेडिट प्रणाली न केवल मुख्य विषयों को सीखने के अवसर देती है बल्कि व्यक्ति के समग्र विकास के लिए मुख्य विषयों से परे सीखने के अतिरिक्त रास्ते भी तलाशती है। इस प्रणाली के कई फायदे हैं। जिनमें से कुछ निम्नलिखित हैं:

- सीबीसीएस शिक्षक–केंद्रित से छात्र–केंद्रित शिक्षा पर ध्यान केंद्रित करती है।
- छात्र जितने क्रेडिट पर नियंत्रण कर सकते हैं उतने क्रेडिट ले सकते हैं (यदि वे एक / अधिक पाठ्यक्रमों में असफल होते हैं तो किसी दिए गए सेमेस्टर में सभी पाठ्यक्रमों को दोहराए बिना)।
- सीबीसीएस शिक्षार्थियों के लिए बहुविषयक, अंतःविषयक पाठ्यक्रम, कौशल–उन्मुख पत्रों (पेपर्स) (यहाँ तक कि उनकी सीखने की जरूरतों, रुचियों और योग्यता के अनुसार अन्य विषयों से भी) और अधिक लचीलेपन का चयन करने की अनुमति देती है।
- सीबीसीएस शिक्षा को व्यापक–आधार और वैश्विक मानकों के अनुरूप बनाती है। छात्र अद्वितीय संयोजनों को मिलाकर कोई भी क्रेडिट ले सकता है। उदाहरण के लिए, अर्थशास्त्र के साथ भौतिकी, रसायन विज्ञान के साथ सूक्ष्म जीव विज्ञान या पर्यावरण विज्ञान आदि।
- सीबीसीएस शिक्षार्थियों को एक पाठ्यक्रम पूरा करने के लिए अलग–अलग समय पर और विभिन्न संस्थानों में अध्ययन करने के लिए लचीलापन प्रदान करती है (शिक्षार्थियों की गतिशीलता को आसान बनाता है)। एक संस्थान में अर्जित क्रेडिट को दूसरे संस्थान में स्थानांतरित किया जा सकता है।

सीबीसीएस को "क्रेडिट" नामक मॉड्यूल / इकाइयों के आधार पर मॉड्युलर पैटर्न पर संचालित किया जाएगा, जिसमें "क्रेडिट" को पाठ्यक्रम/पत्र के लिए निर्धारित विषयवस्तु/पाठ्यक्रम की प्रमात्रा के रूप में परिभाषित किया गया है और शिक्षण–अधिगम के लिए आवश्यक न्यूनतम घंटों की संख्या निर्धारित करती है। सीबीसीएस, कैफेटेरिया प्रणाली की तरह, शिक्षार्थियों को अपनी शिक्षा चुनने की जिम्मेदारी लेने में सक्षम बनाता है।

सीबीसीएस (यूजीसी – कार्य योजना, 2009) को लागू करने के लिए निम्नलिखित कदम उठाए जाने हैं:

- अध्ययन पत्र, संत्रात परीक्षा, सत्रीय पत्र, नियत कार्यों और प्रयोगों सहित पाठ्यचर्या सम्बन्धी विषयवस्तु की समीक्षा करना।
- सभी पाठ्यचर्या सम्बन्धी विषयवस्तुओं को इकाइयों और उप–इकाइयों में विभाजित किया जाना है। इन पाठ्यचर्या सम्बन्धी विषयवस्तुओं को क्रेडिट दिया जाना चाहिए।
- संकाय मुख्य पाठ्यक्रम और ऐच्छिक तय करे।
- वे मूल और वैकल्पिक क्रेडिट के अधिभार का मूल्यांकन करें।
- संकाय प्रत्येक शैक्षणिक कार्यक्रम के लिए अर्जित किए जाने वाले कुल क्रेडिट का निर्णय करे।
- कोर क्रेडिट कार्यक्रम के लिए अद्वितीय होंगे लेकिन ऐच्छिक–क्रेडिट के अन्य कार्यक्रमों के साथ अतिव्याप्त (ओवरलैप) होने की संभावना है।
- किसी विशेष कार्यक्रम में नामांकित शिक्षार्थी ऐच्छिक क्रेडिट चुनने और अर्जित करने के लिए स्वतंत्र होंगे।

4.8.2 चयन आधारित क्रेडिट प्रणाली (सी बी सी एस) (यू.जी.सी.) में प्रयुक्त महत्वपूर्ण पदों का अर्थ

1. **शैक्षिणक वर्ष (Academic Year)** : लगातार दो (एक विषम + एक सम) सेमेस्टर एक शैक्षणिक वर्ष का गठन करते हैं।
2. **पाठ्यक्रम (Course)** : आमतौर पर "पत्रों" (पेपर्स) के रूप में संदर्भित, एक कार्यक्रम का एक घटक है। सभी पाठ्यक्रमों को एक समान अधिभार दिए जाएँ यह आवश्यक नहीं है। पाठ्यक्रम के द्वारा अधिगम के उद्देश्यों और अधिगम के परिणामों को परिभाषित किया जाना चाहिए। एक पाठ्यक्रम को व्याख्यान /शिक्षकीय/ प्रयोगशाला कार्य/ क्षेत्रीय कार्य/आगे बढ़ने की (आउटरीच) की गतिविधियों/ परियोजना कार्य/ व्यावसायिक प्रशिक्षण/ मौखिक परीक्षा (Viva)/संगोष्ठी (सेमिनार)/सत्रीय परीक्षा (टर्म पेपर)/नियत कार्य/ प्रस्तुति/ स्व–अध्ययन आदि या इनमें से कुछ के संयोजन को शामिल करने के लिए डिजाइन किया जा सकता है।
3. **चयन आधारित क्रेडिट प्रणाली(Choice Based Credit System - (CBCS)**: सीबीसीएस शिक्षार्थियों को निर्धारित पाठ्यक्रमों में से चयन करने का विकल्प प्रदान करती है। सीबीसीएस में तीन तरह के पाठ्यक्रम होते हैं–i) कोर/मुख्य पाठ्यक्रम, ii) ऐच्छिक (वैकल्पिक) पाठ्यक्रम और iii) क्षमता संवर्धन पाठ्यक्रम।

   i) ***कोर/मुख्य पाठ्यक्रम* (Core Course)**: इस श्रेणी के तहत तैयार किए गए पाठ्यक्रम का उद्देश्य उन मूल बातों को शामिल करना है जो एक छात्र से उस विशेष विषय में आत्मसात करने की अपेक्षा की जाती है। एक पाठ्यक्रम, जिसे एक उम्मीदवार द्वारा अनिवार्य रूप से एक मुख्य आवश्यकता के रूप में अध्ययन किया जाना चाहिए, एक कोर पाठ्यक्रम कहा जाता है।

ii) *ऐच्छिक/वैकल्पिक पाठ्यक्रम* **(*Elective* Course)** : आम तौर पर, एक पाठ्यक्रम जिसे पाठ्यक्रमों के एक समूह से चुना जा सकता है और जो अध्ययन के विषय के लिए बहुत विशिष्ट या विशेष या उन्नत या सहायक हो सकता है या जो एक विस्तारित दायरा प्रदान करता है या जो किसी अन्य विद्याशाखा/विषय/क्षेत्र के संसर्ग में छात्र को सक्षम बनाता है या उनकी की दक्षता/कौशल का पोषण करता है उसे ऐच्छिक (वैकल्पिक) पाठ्यक्रम कहा जाता है।

iii) *क्षमता संवर्धन पाठ्यक्रम* **(*Ability Enhancement Courses - AEC*)**: क्षमता संवर्धन पाठ्यक्रम (ए ई सी) दो प्रकार के हो सकते हैं: क्षमता संवर्धन अनिवार्य पाठ्यक्रम (Ability Enhancement Compulsory Courses - AECC) और कौशल संवर्धन पाठ्यक्रम (Skill Enhancement Courses - SEC)। "क्षमता संवर्धन अनिवार्य पाठ्यक्रम" (ए ई सी सी) विषयवस्तु पर आधारित पाठ्यक्रम हैं जो ज्ञान में वृद्धि करते हैं, (i) पर्यावरण विज्ञान और (ii) अंग्रेजी/हिंदी/एम आई एल सम्प्रेषण/संचार। ये सभी विषयों के लिए अनिवार्य होते हैं। एस ई सी पाठ्यक्रम मूल्य–आधारित और/अथवा कौशल–आधारित होते हैं और इनका उद्देश्य व्यावहारिक प्रशिक्षण, दक्षताएँ, कौशल आदि प्रदान करना है।

4. **क्रेडिट आधारित सेमस्टर प्रणाली (Credit Based Semester System – (CBSS)**: सीबीएसएस के तहत, शिक्षार्थियों द्वारा पूरा किए जाने वाले क्रेडिट की संख्या के रूप में डिग्री या डिप्लोमा या प्रमाण पत्र प्रदान करने की अपेक्षाएँ निर्धारित की जाती है।

5. **क्रेडिट बिन्दु (Credit Point)** : यह एक पाठ्यक्रम के लिए ग्रेड बिन्दु और क्रेडिट की संख्या का गुणनफल होता है।

6. **क्रेडिट (Credit)** : एक इकाई जिसके द्वारा पाठ्यक्रम कार्य को मापा जाता है। यह प्रति सप्ताह के लिए अनुदेशन के लिए आवश्यक घंटों की संख्या निर्धारित करता है। एक क्रेडिट एक घंटे के शिक्षण (व्याख्यान या ट्यूटोरियल) या प्रति सप्ताह दो घंटे के व्यावहारिक कार्य/क्षेत्र कार्य के बराबर होता है।

7. **संचयी औसत ग्रेड बिन्दु (Cumulative Grade Point Average - CGPA)**: यह सभी सेमेस्टर में एक छात्र के समग्र संचयी प्रदर्शन की एक माप है। सीजीपीए सभी सेमेस्टर में विभिन्न पाठ्यक्रमों में एक छात्र द्वारा प्राप्त कुल क्रेडिट अंकों का अनुपात है और सभी सेमेस्टर में सभी पाठ्यक्रमों के कुल क्रेडिट का योग है। इसे दो दशमलव स्थानों तक व्यक्त किया जाता है।

8. **ग्रेड बिन्दु (Grade Point)**: यह 10–बिंदु पैमाने पर प्रत्येक अक्षर ग्रेड को आवंटित एक संख्यात्मक भार है।

9. **अक्षर ग्रेड (Letter Grade)**: यह एक उक्त पाठ्यक्रम में शिक्षार्थियों के प्रदर्शन का एक सूचकांक है। ग्रेडों को O, A+, A, B+, B, C, P और F अक्षरों से दर्शाया जाता है।

10. **कार्यक्रम (Programme)**: कार्यक्रम (प्रोग्राम) एक डिग्री, डिप्लोमा या प्रमाणपत्र प्रदान करने के लिए प्रस्तुत शैक्षिक कार्यक्रम होता है।

11. **सेमेस्टर ग्रेड बिन्दु औसत (Semester Grade Point Average - SGPA)** : यह एक सेमेस्टर में किए गए कार्य के प्रदर्शन की एक माप है। यह एक सेमेस्टर में पंजीकृत विभिन्न पाठ्यक्रमों में एक छात्र द्वारा प्राप्त कुल क्रेडिट बिन्दुओं और उस सेमेस्टर के दौरान लिए गए कुल पाठ्यक्रम क्रेडिट का अनुपात है। इसे दो दशमलव स्थानों तक व्यक्त किया जाएगा।

12. **सेमेस्टर (Semester)**: प्रत्येक सेमेस्टर में 90 वास्तविक शिक्षण दिनों के बराबर 15–18 सप्ताह का शैक्षणिक कार्य शामिल होगा। विषम सेमेस्टर जुलाई से दिसंबर तक और सम सेमेस्टर जनवरी से जून तक निर्धारित किया जा सकता है।

13. **प्रतिलेख या ग्रेड कार्ड या प्रमाणपत्र (Transcript or Grade Card or Certificate)**: अर्जित ग्रेड के आधार पर, प्रत्येक सेमेस्टर के बाद सभी पंजीकृत शिक्षार्थियों को एक ग्रेड प्रमाण पत्र जारी किया जाएगा। ग्रेड प्रमाणपत्र उस सेमेस्टर के सेमेस्टर ग्रेड बिन्दु औसत और उस सेमेस्टर तक अर्जित सेमेस्टर ग्रेड बिन्दु औसत के साथ पाठ्यक्रम विवरण (कोड, शीर्षक, क्रेडिट की संख्या, प्राप्त ग्रेड) प्रदर्शित करेगा।

अपनी प्रगति की जाँच करें 6

टिप्पणी: (क)अपने उत्तर को दिए गए प्रत्येक विषय के पश्चात् रिक्त स्थान में लिखिए।

(ख) अपने उत्तरों की तुलना इकाई के अंत में दिए गए उत्तरों से कीजिए।

i) चयन आधारित क्रेडिट प्रणाली (CBCS)क्या है? यह हमारी शिक्षा प्रणाली को बेहतर बनाने में कैसे योगदान दे रहा है?

.....

.....

.....

.....

.....

4.9 सारांश

इस इकाई में, हमने पाठ्यचर्या की रूपरेखा, पाठ्यचर्या और पाठ्यविवरण की मूल बातें सीखी हैं। हमने पाठ्यचर्या और शिक्षाशास्त्रीय निहितार्थ के बीच महत्वपूर्ण सम्बन्ध को भी समझा है। किस प्रकार प्रभावी शिक्षण के लिए शिक्षाशास्त्र बहुत महत्वपूर्ण है, इसकी व्याख्या इस इकाई में की गई है। इस इकाई में राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005 के प्रमुख विचारों और समग्र शिक्षा प्रणाली बनाने के लिए यह कैसे महत्वपूर्ण है, इसके बारे में भी बताया गया है। इस इकाई में पाठ्यचर्या सम्बन्धी संरचना के बारे में राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 2020 द्वारा दी गई सिफारिशों की भी चर्चा की गई है। भारत में उच्च शिक्षा को बदलने के लिए चयन आधारित क्रेडिट प्रणाली (CBCS) के मुख्य विचारों पर भी परिचर्चा की गई है।

4.10 इकाई अन्त अभ्यास

- विभिन्न विद्यालय बोर्डों के माध्यमिक स्तर के पाठ्यचर्या–पाठ्यविवरण के प्रलेख का परीक्षण कीजिए। संरचना, उद्देश्यों, विषयवस्तु प्रस्तुति, मूल्यांकन डिजाइन आदि के संदर्भ में उनकी तुलना करने का प्रयास करें।
- प्राथमिक स्तर के कुछ बच्चों से बात करें और उनके विचारों के बारे में जानें कि उन्हें किस तरह की शिक्षण विधियाँ बहुत पसंद हैं और क्यों?
- विद्यालय शिक्षकों के कुछ साक्षात्कार लें और पाठ्यचर्या के कार्यान्वयन और शिक्षाशास्त्र से सम्बन्धित उनकी चुनौतियों के बारे में जानने की कोशिश करें।

4.11 संदर्भ ग्रंथ एवं उपयोगी पुस्तकें

- फ्रेयरे पाउलो (1970). *पेडागाजी ऑफ द ओप्रेस्ड.* न्यू यॉर्कः द कॉन्टिनम इंटरनेशनल पब्लिशिंग ग्रुप लिमिटेड
- गवर्नमेंट ऑफ इंडिया (2020). नेशनल एजूकेशनल पॉलिसी. 2020, रिट्रीव्ड फ्रामः https://www.education.gov.in/sites/upload_files/mhrd/files/NEP_Final_ English_0.p
- एन.सी.ई.आर.टी. (2006). *पोजीशन पेपर ऑन नेशनल फोकस ग्रुप आन करीकुलम, सिलेबस, ऐंड टेक्स्टबुक्स, न्यू* दिल्लीः एन.सी.ई.आर.टी.
- एन.सी.ई.आर.टी. (2005). *नेशनल करीकुलम फ्रेमवर्क* (एन सी एफ 2005). न्यू दिल्लीः नेशनल कौंसिल ऑफ एजूकेशनल रिसर्च ऐण्ड ट्रेनिंग.
- एस.सी.ई.आर.टी.(2008). बिहार *करीकुलम फ्रेमवर्क* . पटनाः एस.सी.ई.आर.टी.
- वय्से, डी., हय्वार्ड, एल., ऐण्ड पंड्या जे. (2016). *द सेज हैंडबुक ऑफ करिकुलम, पेडागाजी ऐन्ड असेसमेंट.* लंदनः सेज पब्लिकेशन्स लिमिटेड.

4.12 आप की प्रगति जाँच के उत्तर

अपनी प्रगति की जाँच करें 1

(i) शिक्षाशास्त्र का पाठ्यचर्या से गहरा सम्बन्ध है। पाठ्यचर्या क्या सामग्री पढ़ाई जानी है, से सम्बन्धित है, जबकि शिक्षाशास्त्र वास्तव में कक्षाओं में किसी भी अवधारणा को पढ़ाने की विधि को संदर्भित करता है।

अपनी प्रगति की जाँच करें 2

i) तालिका 4.1 देखिए।

अपनी प्रगति की जाँच करें 3

i) राष्ट्रीय बनाम स्थानीय पाठ्यचर्या, पाठ्यचर्या का सन्दर्भीकरण, पाठ्यचर्या के सिद्धांत को अभ्यास से जोड़ना, पाठ्यचर्या में आईसीटी का एकीकरण, पाठ्यचर्या सम्बन्धी अनुसंधान और अभ्यास के लिए मानकों की स्थापना आदि।

अपनी प्रगति की जाँच करें 4

i) एक एकीकृत पाठ्यचर्या बच्चों को विषय सीमाओं द्वारा लगाए गए प्रतिबंधों के बिना, समग्र रूप से सीखने की अनुमति देता है।

अपनी प्रगति की जाँच करें 5

i) राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2005 के प्रमुख विचार बच्चे को प्रधान रूप से एक सक्रिय और प्राकृतिक सीखने वाले के रूप में स्वीकार करना है; अधिगम ज्ञान के निर्माण की एक प्रक्रिया के रूप में; समीक्षात्मक शिक्षाशास्त्र की ओर अग्रसर अन्तःक्रिया एवं संवाद के माध्यम से अधिगम।

अपनी प्रगति की जाँच करें 6

i) चयन आधारित क्रेडिट प्रणाली (CBCS) शिक्षार्थियों को निर्धारित पाठ्यक्रमों (कोर, ऐच्छिक, और क्षमता संवर्धन पाठ्यक्रमों) में से चयन करने का विकल्प प्रदान करती है। इससे छात्रों को उनकी रुचि के अनुसार चुनने के लिए और अधिक विकल्प मिलते हैं। यह इच्छुक शिक्षार्थियों द्वारा नए ज्ञान का निर्माण करने में हमारी उच्च शिक्षा को सकारात्मक रूप से बढ़ाएगा।

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY